जैव ईंधन का एक रूप यह भी

युरोप में विचित्र स्थिति निर्मित हो गई है। वहां 20 करोड़ लीटर वाइन और वाइन उद्योग के सह-उत्पाद के रूप में पड़े अल्कोहल को ठिकाने लगाने की समस्या पैदा हो गई है। इसमें से अधिकांश वाइन घटिया दर्जे की है और पीने योग्य नहीं है। इस वाइन के आसवन से अल्कोहल बनाया जाएगा जिसका उपयोग ईंधन के रूप में किया जाएगा। वाइन में लगभग 10 प्रतिशत अल्कोहल होता है, शेष पानी होता है। इसमें से अल्कोहल प्राप्त करना महंगा काम है।

फिलहाल युरोपीय संघ वाइन उद्योग को सहारा देने के लिए प्रति वर्ष 130 करोड़ यूरो खर्च करता है। इसमें से 9 करोड़ यूरो तो मात्र 'आपात आसवन' पर खर्च होते हैं। 'आपात आसवन' का मतलब होता है घटिया क्वालिटी की वाइन का आसवन करके अल्कोहल प्राप्त करना। प्रति वर्ष लगभग साढ़े चार करोड़ लीटर वाइन का आसवन इस तरह किया जाता है। इसके लिए बाकायदा निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं।

यह तो सही है कि ईंधन की किल्लत से जूझ रही दुनिया में ईंधन उत्पादन का कोई भी प्रयास सराहनीय माना जाएगा मगर युरोपीय संघ की दिक्कत दूसरी है। कृषि व ग्रामीण विकास सचिव मेरिएन फिशर बोएल का कहना है कि 'आपात आसवन' की यह प्रथा बंद होनी चाहिए क्योंकि अंततः यह बहुत खर्चीली होती है। उनका मत है कि युरोप के वाइन उद्योग पर यह दबाव पड़ना चाहिए कि वह इस तरह की घटिया वाइन बनाने से बाज आए। फिलहाल उद्योग घटिया वाइन बनाता है क्योंकि उसे सब्सिडी मिल जाती है।

युरोप वाइन को जैव-ईंधन का कच्चा माल नहीं बना सकता। इसमें प्रमुख चिंता इस बात की है कि खाद्य फसलें यदि जैव ईंधन बनाने में खपेंगी तो ईंधन और भोजन के बीच अनावश्यक होड़ शुरू हो जाएगी। दरअसल जैव ईंधन बनाने का काम अनुपयोगी फसल अवशेषों से किया जाना चाहिए। मगर सरकार के लिए रास्ता आसान नहीं होगा क्योंकि युरोप में वाइन आर्थिक व भावनात्मक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण उत्पाद है। ***(स्रोत फीचर्स)***